# त्यौहार मनानेकी उचित पद्धतियां एवं अध्यात्मशास्त्र

## अनुक्रमणिका

(कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।)


१. वर्षा, शरद और हेमंत ऋतुओंमें तीज-त्यौहारोंका अधिक होना २७
२. त्यौहार मनानेके लिए आवश्यक पूर्वप्रबंध २७
३. संवत्सरारंभ २७
* नववर्षारंभ मनानेकी पद्धति २९
४. अक्षय ( अक्षय्य ) तृतीया ३६
५. नागपंचमी ३९
* नागकी महिमा ३९
६. श्रावण पूर्णिमा ( नारियल पूर्णिमा ) ४०
७. नवरात्रि ४२
८. दशहरा ( विजयादशमी ) ४२
९. वसुबारस ( गोवत्स द्वादशी ) ४८
१०. गुरुद्वादशी ४८
११. दिवाली ( दीपावली ) ४८
* कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी ४९
* नरक चतुर्दशी ५१
* कार्तिक अमावस्या ५२
* लक्ष्मीपूजन ५२
* अलक्ष्मी निःसारण ५५
* बलिप्रतिपदा ( दीपावली पडवा ) ५६
* भैयादूज ( यमद्वितीया ) ५७
* दीपावलीका स्वरूप ( दीपोंकी सजावट, आकाशदीप इ. ) ५९
* दीपावली मनानेके लिए पटाखोंका उपयोग मत कीजिए ! ६१

* दीपावली मनोरंजनके लिए नहीं; अपितु यह धार्मिकता एवं भारतीय संस्कृतिको संजोए रखनेका त्यौहार है ६१
* पटाखे जलानेके दुष्परिणाम ६२
१२. तुलसी विवाह ६३
१३. देवदीपावली ६३
१४. मकर संक्रांति ६४
१५. रथसप्तमी ६७

# भूमिका

## १. त्यौहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रत मनानेके उद्देश्य

अ. सामान्य जानकारी : हमारे त्यौहार एवं उत्सव ऐसे हैं कि जो इहलोकमें सुखदायी तो होते हैं, साथ ही मृत्युके उपरांत भी सद्गति देते हैं ।

आ. प्राकृतिक परिवर्तन, उदा. नारियल पूर्णिमा । वर्षा ऋतुकी समाप्तिपर जब समुद्र शांत हो जाता है, तब नारियल पूर्णिमा मनाते हैं ।

इ. अवतारोंकी जन्मतिथि, उदा. श्रीराम नवमी । श्रीराम, श्रीकृष्ण आदि अवतारोंकी जन्मतिथि मनाते हैं; क्योंकि देहत्यागसे उनकी मृत्यु नहीं होती । वे भक्तोंके लिए कभी भी देह धारण कर सकते हैं अर्थात वे अमर हैं ।

ई. संतोंकी पुण्यतिथि, उदा. श्री ज्ञानेश्वर पुण्यतिथि । संतोंके देहत्यागका दिन मनाया जाता है; क्योंकि वे जब जन्म लेते हैं, तब अधिकतर बाह्यतः केवल सामान्य व्यक्ति अथवा साधक होते हैं । आगे साधना कर वे संतपदको प्राप्त होते हैं । देहत्यागके पश्चात वे उच्चलोकमें जाते हैं एवं उनका कार्य और बढ जाता है; देह शेष न रहनेके कारण देह हेतु आवश्यक शक्तिका भी उपयोग कार्य हेतु ही होता है । इसलिए उनके पुण्यस्मरणके दिन पुण्यतिथि मनाई जाती है । सामान्य व्यक्तियों के संदर्भमें केवल उनकी मृत्युके दिन श्राद्ध करना आवश्यक होता है, इस कारण उस दिनको ध्यानमें रखते हैं ।

उ. पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटना, उदा. वटसावित्री । इस दिन सावित्रीने यमसे वादविवादमें जीतकर अपने पतिको पुनः जीवित करवाया था ।

ऊ. आध्यात्मिक शिक्षा : साधनाका एकमात्र उद्देश्य यह है कि साधक, साधन एवं साध्यमें अद्वैत हो तथा साधक परमेश्वरसे एकरूप हो जाए । इस दृष्टिकोणसे एक चरणके रूपमें साधनोंमें भी ईश्वररूप देख पाना, यह सीखने हेतु कुछ त्यौहार मनाए जाते हैं, उदा.

ऊ १. शीतला सप्तमी : रसोईका चूल्हा, कडाही, संडसी इत्यादि साधनोंका इस दिन प्रयोग न कर, उनकी पूजा की जाती है ।

ऊ २. पोला : इस दिन किसान अपने बैल और हल की पूजा करते हैं ।

ऊ ३. विजयादशमी : सर्व अपने-अपने साधनोंकी पूजा करते हैं, उदा. सूचिक (दर्जी) कैंची व सिलाई मशीनकी; विद्यार्थी व शिक्षक पुस्तकोंकी आदि ।

ऊ ४. लक्ष्मीपूजन : व्यापारी वर्ग तराजू एवं बहीखातोंकी पूजा करते हैं तथा गृहिणी झाडूकी पूजा करती है ।

**२. त्यौहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रतमें भेद :** यह भेद स्पष्ट नहीं है; क्योंकि कुछ त्यौहार धार्मिक उत्सव एवं व्रतके रूपमें भी मनाए जाते हैं, उदा. श्रीराम नवमी जब व्यक्तिगतरूपसे मनाई जाती है तब 'त्यौहार' होती है; जब समाजमें मिलकर मनाते हैं, तब 'उत्सव' होती है और संकल्प कर व्हाक्तिगत रूपसे करनेपर वह 'व्रत' होती है ।

**३. त्यौहार, उत्सव आदिको मात्र रूढि न समझिए; अपितु उनके गूढार्थ एवं शास्त्रपर ध्यान दीजिए ! :** भारतमें अनेक त्यौहार, उत्सव एरां परंपराएं हैं । अधिकांश लोग उनके गूढार्थ एवं शास्त्रपर ध्यान नहीं देते, उन्हें केवल रूढिके रूपमें मनाते हैं । चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदापर नीमके कोमल पत्तोंका प्रसाद ग्रहण करते हैं । नीम-प्रसादके सेवनका शास्त्र है - 'अन्य किसी भी पदार्थकी अपेक्षा नीममें उस विशेष कालावधिमें प्रजापति-तरंगें ग्रहण करनेकी क्षमता अधिक होती है । अतः उसके सेवनसे प्रजापति-तरंगोंका लाभ अधिक होता है ।' त्यौहार एवं उत्सवके गूढार्थ एवं शास्त्रका बोध होनेसे वे अधिक श्रद्धापूर्वक मनाए जा सकते हैं; इसलिए इस ग्रंथमें गूढार्थ एवं शास्त्र प्रस्तुत करनेपर विशेष बल दिया गया है । प्रादेशिक भिन्नता, जनजीवन, उपासनाकी पद्धतियां आदिके कारण त्यौहार, उत्सव मनानेकी प्रथाओंमें भेद पाए जाते हैं । यहांपर महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि शास्त्रीय आधारहीन पर्वोंको केवल लौकिक प्रथाके रूपमें मनाना अनुचित है । इन लौकिक प्रथाओंको त्यागकर शास्त्रसम्मत कृति करना आवश्यक होता है । व्रतोंके संदर्भमें, उनके पीछे किसी उन्नत पुरुषका संकल्प होता है, यही उसका अध्यात्मशास्त्रीय आधार है ।

**४. धर्म एवं संस्कृतिकी हानि करनेवाली प्रथाओंका विरोध कीजिए ! :** ऐसी प्रथाओंको आजकल समाजमें महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है, उदा. दीपावली एवं गणेशोत्सवपर पटाखे जलाए

जाते हैं, गणेशोत्सव तथा नवरात्रोत्सवके निमित्त चंदा ऐंठना, असभ्य व्यवहार जैसे अनेक अनाचार होते हैं । 'ऐसी प्रथाएं ही त्यौहार, उत्सव मनानेकी उचित पद्धति हैं', ऐसा अनुचित संस्कार भावी पीढीपर हो रहा है । इन प्रथाओंका बहिष्कार तथा विरोध करना, धर्मपालन ही है । इन ग्रंथोंमें कुछ कुप्रथाओंकी निरर्थकता प्रस्तुत की गई है ।

### ५. ईश्वरप्राप्तिकी दृष्टिसे त्यौहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रतोंका महत्त्व

अ. त्यौहार, उत्सव एवं व्रतोंका आध्यात्मशास्त्रीय आधार है । अतएव उन्हें मनानेसे चैतन्यकी निर्मिति होती है । इस माध्यमसे सर्वसामान्य मनुष्यको भी ईश्वरकी ओर अग्रसर होनेमें सहायता मिलती है ।

आ. साधकोंके दृष्टिकोणसे कर्मकांड कनिष्ठ श्रेणीका है, फिर भी साधना न करनेवालोंको धीरे-धीरे साधनाकी ओर प्रवृत्त करनेकी दृष्टिसे वह महत्त्वपूर्ण सिद्ध होता है । कर्मकांडकी दृष्टिसे त्यौहार, धार्मिक उत्सव व व्रतका इतना महत्त्व है कि वर्षमें लगभग ७५ प्रतिशत तिथियोंपर इनमेंसे कुछ न कुछ तो होता ही है ।

इ. वास्तवमें अपने जीवनमें सदैव संयम आवश्यक है; परंतु उसका पालन नहीं होता । इसलिए त्यौहार, उत्सव व व्रतके दिन तो उसके पालनसे धीरे-धीरे सदैव ही संयमित जीवन जी सकेंगे।

त्यौहार, धार्मिक उत्सव एवं व्रतके शास्त्रीय आधारको समझकर वे श्रद्धापूर्वक मनाए जाएं एवं सबका जीवन कल्याणमय हो, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है । - **संकलनकर्ता**